SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-4, खण्ड-3, अक्टूबर - दिसम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय स्थापत्य कला का विकास और सौंदर्यबोध

भक्ति अग्रवाल

सहायक प्राध्यापक (ललितकला)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

भारतीय स्थापत्य कला केवल पत्थरों और इमारतों का संयोजन नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता, धर्म, दर्शन और संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस कला का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होकर वैदिक, बौद्ध, हिंदू, इस्लामी, मुगल, औपनिवेशिक और आधुनिक काल तक निरंतर विकसित होता रहा है। प्रत्येक युग में स्थापत्य ने समाज की धार्मिक आस्था, सत्ता की संरचना और सौंदर्यबोध को मूर्त रूप दिया है।

गुप्त युग में मंदिर स्थापत्य की शुरुआत, चालुक्य और चोल युग में दक्षिण भारतीय शैली का उत्कर्ष, तथा मुगल काल में इस्लामी स्थापत्य का वैभव भारतीय स्थापत्य की बहुरंगी परंपरा को दर्शाता है। आधुनिक युग में तकनीकी और वैश्विक प्रभावों के कारण स्थापत्य में नई प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं – जैसे शहरी नियोजन, पर्यावरणीय वास्तुकला, और सस्टेनेबल डिजाइन। यह शोध भारतीय स्थापत्य कला के विकासक्रम, सौंदर्यशास्त्र, और आधुनिक संदर्भों का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द

भारतीय स्थापत्य कला, मंदिर वास्तु, इस्लामी स्थापत्य, मुगल स्थापत्य, औपनिवेशिक वास्तु, आधुनिक वास्तुशिल्प, सौंदर्यबोध, संस्कृति, परंपरा और नवाचार।

प्रस्तावना

स्थापत्य कला मानव सभ्यता के सबसे प्राचीन सृजनात्मक प्रयासों में से एक है। भारत में स्थापत्य न केवल उपयोगिता की दृष्टि से, बल्कि धार्मिक और सौंदर्यपरक दृष्टि से भी अत्यंत

समृद्ध रहा है। यह कला मनुष्य के 'रहने' की जगह को 'आध्यात्मिक अनुभव' में रूपांतरित करती है।

भारतीय स्थापत्य का इतिहास हमें मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से लेकर नई दिल्ली और मुंबई की आधुनिक इमारतों तक जोड़ता है। विभिन्न कालों में भारत ने विविध स्थापत्य शैलियों को अपनाया –

मौर्य काल का स्तंभ और शिलागृह

गुप्त काल के मंदिर

चालुक्य और चोल युग का द्रविड़ स्थापत्य

नागर, वेसर और द्रविड़ शैलियों का समन्वय

मुगल काल की भव्य इमारतें जैसे ताजमहल

ब्रिटिश काल की औपनिवेशिक इमारतें

और आज का आधुनिक, तकनीकी स्थापत्य

भारतीय स्थापत्य कला का विकास न केवल स्थापत्य सिद्धांतों का परिणाम है, बल्कि यह समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों का दर्पण भी है।

शोध के उद्देश्य

1. भारतीय स्थापत्य कला के ऐतिहासिक विकासक्रम का अध्ययन करना।
2. स्थापत्य कला के सौंदर्यशास्त्रीय और दार्शनिक आधारों का विश्लेषण करना।
3. विभिन्न स्थापत्य शैलियों – नागर, द्रविड़, वेसर, मुगल आदि – का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. आधुनिक स्थापत्य पर तकनीकी और वैश्विक प्रभावों की समीक्षा करना।
5. भारतीय स्थापत्य की सांस्कृतिक पहचान और भविष्य की दिशा का मूल्यांकन करना।

अंक-4, खण्ड-3, अक्टूबर - दिसम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

शोध पद्धति

यह शोध ऐतिहासिक-वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

प्राथमिक स्रोत: पुरातात्त्विक स्थल, स्थापत्य अवशेष, मंदिर और स्मारक निरीक्षण।

द्वितीयक स्रोत: स्थापत्य कला पर आधारित ग्रंथ, जर्नल, पुरातत्व विभाग की रिपोर्टें, और आधुनिक वास्तु सिद्धांत।

अध्ययन का दृष्टिकोण गुणात्मक है, जिससे रूप, सौंदर्य और अर्थ का विश्लेषण किया जा सके।

शोध विस्तार

1. भारतीय स्थापत्य की उत्पत्ति और प्रारंभिक स्वरूप

भारत का स्थापत्य इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता (2500-1500 ई.पू.) से प्रारंभ होता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की योजनाबद्ध नगरीय संरचनाएँ–सड़कें, नालियाँ, स्नानगृह, गोदाम आधुनिक नगरीय नियोजन के आदर्श उदाहरण हैं। इन संरचनाओं में उपयोगिता, संतुलन और सौंदर्य का अद्भुत संयोजन है।

2. मौर्य और बौद्ध स्थापत्य

मौर्य काल (322-185 ई.पू.) में स्थापत्य कला ने राज्यशक्ति और धर्म दोनों का प्रतिनिधित्व किया। अशोक के स्तंभ, सारनाथ का सिंह शीर्ष, और बराबर गुफाएँ इस काल के प्रमुख उदाहरण हैं। बौद्ध स्थापत्य ने "स्तूप, विहार और चैत्य" के रूप में नई स्थापत्य परंपरा विकसित की। सांची, भरहुत और अमरावती के स्तूप कला और धर्म का समन्वय हैं।

3. गुप्त काल और हिंदू मंदिर स्थापत्य का उत्कर्ष

गुप्त युग (4वीं-6वीं सदी) को हिंदू मंदिर स्थापत्य का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में मूर्तिकला और वास्तु का सम्मिलन हुआ। मुख्य उदाहरण: देवगढ़ का दशावतार मंदिर, भितरगाँव का ईंट मंदिर, तिगवा और सांची मंदिर।

मंदिर स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियाँ:

1. नागर शैली (उत्तर भारत): शिखर ऊँचा, गर्भगृह, मंडप और आमलक शीर्ष।

2. द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत): गोपुरम, विमाना, मंडप और विशाल प्रांगण।

3. वेसर शैली (मध्य भारत): नागर और द्रविड़ तत्वों का समन्वय।

4. मध्यकालीन स्थापत्य और सौंदर्यबोध

मध्यकाल में मंदिर स्थापत्य का उत्कर्ष हुआ।

(क) खजुराहो के मंदिर (10वीं-11वीं सदी):

चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित ये मंदिर मानव जीवन की संपूर्णता को मूर्त करते हैं धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष। यहाँ की मूर्तियाँ जीवन के सौंदर्य, शक्ति और भावनाओं का दृश्य रूप हैं।

(ख) कोणार्क का सूर्य मंदिर (13वीं सदी):

यह मंदिर वास्तुकला का चमत्कार है – रथ के रूप में निर्मित यह मंदिर सूर्य देव की प्रतीकात्मक आराधना है।

(ग) होयसलेश्वर मंदिर (कर्नाटक):

द्रविड़ और वेसर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण, जिसमें पत्थर पर सूक्ष्म नक्काशी है।

5. इस्लामी और मुगल स्थापत्य

13वीं शताब्दी से भारत में इस्लामी स्थापत्य का प्रवेश हुआ। इस काल की वास्तुकला में गुंबद, मीनार, मेहराब और ज्यामितीय आकृतियाँ प्रमुख तत्व हैं।

(क) दिल्ली सल्तनत काल:

कुतुब मीनार, अलाई दरवाज़ा, तुगलकाबाद किला शक्तिशाली स्थापत्य के प्रतीक।

(ख) मुगल स्थापत्य:

मुगल काल में भारतीय और फारसी स्थापत्य का संगम हुआ।

अकबर काल: फतेहपुर सीकरी लाल बलुआ पत्थर में भारतीय-फारसी मिश्रण।

जहाँगीर काल: बागवानी और नक्काशी का प्रभाव।

शाहजहाँ काल: स्थापत्य कला की पराकाष्ठा ताजमहल (सफेद संगमरमर में निर्मित अद्भुत सौंदर्य)।

मुगल स्थापत्य में संतुलन, समरूपता, अनुपात और सजावट का गहन सौंदर्यबोध दिखाई देता है।

6. औपनिवेशिक स्थापत्य और आधुनिकता की शुरुआत

ब्रिटिश शासनकाल में पश्चिमी स्थापत्य सिद्धांतों का प्रवेश हुआ। नई दिल्ली के निर्माण में लुटियंस और बेकर की योजनाओं में भारतीय प्रतीकों और यूरोपीय शैली का सम्मिश्रण देखा जा सकता है। कोलकाता, मुंबई, चेन्नई जैसे शहरों में गोथिक और विक्टोरियन स्थापत्य का प्रभाव दिखाई देता है।

7. स्थापत्य का सौंदर्यशास्त्र

भारतीय स्थापत्य का सौंदर्यबोध केवल रूपात्मक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक है। 'वास्तुशास्त्र' और 'शिल्पशास्त्र' में स्थापत्य के अनुपात, दिशा, ज्यामिति और ऊर्जा संतुलन का विस्तृत वर्णन है। मंदिर के गर्भगृह से लेकर शिखर तक की रचना 'जीवन यात्रा' का प्रतीक मानी गई है। मुगल स्थापत्य में सौंदर्य का अर्थ संतुलन और समरूपता है, जबकि आधुनिक स्थापत्य में कार्यशीलता और रचनात्मक स्वतंत्रता पर बल है।

8. स्थापत्य का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

भारतीय स्थापत्य केवल धार्मिक केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब है। मंदिरों, मस्जिदों, किलों और भवनों ने समाज की सामूहिक चेतना को आकार दिया। आज भी स्थापत्य भारतीय सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख तत्व है।

9. भारतीय स्थापत्य की वर्तमान स्थिति और भविष्य

वर्तमान में भारत में स्थापत्य कला तकनीकी रूप से अत्यधिक विकसित हो चुकी है। कांच, इस्पात, और मिश्रित सामग्रियों से बने भवन वैश्विक मानक स्थापित कर रहे हैं। परंतु साथ ही, पर्यावरणीय दृष्टिकोण और पारंपरिक मूल्यों की पुनःस्थापना की आवश्यकता है। भविष्य का भारतीय स्थापत्य "परंपरा और तकनीक" के संगम पर आधारित होगा।

निष्कर्ष

भारतीय स्थापत्य कला ने युगों के परिवर्तन के साथ स्वयं को पुनर्निर्मित किया है। इसमें धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला और समाज सभी के तत्व समाहित हैं। जहाँ प्राचीन स्थापत्य में अध्यात्म और प्रतीकवाद था, वहीं आधुनिक स्थापत्य में कार्यशीलता और नवाचार का समन्वय है। भारतीय स्थापत्य केवल इमारतों का समूह नहीं, बल्कि "जीवन, सौंदर्य और संस्कृति का जीवंत संवाद" है। आज आवश्यक है कि हम अपनी स्थापत्य परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर एक नई भारतीय पहचान निर्मित करें।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामस्वरूप (2017). भारतीय स्थापत्य कला का इतिहास. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
2. कोहली, वी.के. (2019). भारतीय वास्तुशास्त्र और सौंदर्यबोध. वाराणसी: कला भारती प्रकाशन।
3. Percy Brown (1942). Indian Architecture: Buddhist and Hindu Periods. Bombay: D.B. Taraporevala Sons.
4. Grover, Satish (1995). Islamic Architecture in India. New Delhi: Prakash Books.
5. Fletcher, Banister (1996). A History of Architecture on the Comparative Method. Oxford University Press.

6. Tillotson, G.H.R. (1989). Mughal Architecture & Gardens. New Delhi: Marg Publications.
7. Correa, Charles (1996). A Place in the Shade: The New Landscape & Other Essays. Penguin.
8. Vastu Shastra (1998). Encyclopaedia of Hindu Architecture. Indira Gandhi National Centre for the Arts.

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार